Date 13/4/20

UNIT 3.

B.A. LL.B 2nd year 4th SEM Political Science

Topic

→ स्वामी दयानंद सरस्वती के राजनीतिक और सामाजिक विचार

1) प्रजातंत्र के पोषक :— स्वामी दयानंद लोकतंत्रवादी थे तथा प्राचीन भारत की राजनीतिक परंपरा व आदर्शों पर आधारित दृढ विश्वासी उनकी मान्यता थी उनका कहना था कि एक व्यक्ति भले ही वह कितना ही अच्छा क्यों न हो उसमे सत्ता केन्द्रीभूत नही होनी चाहिए। उन्होने स्पष्ट कहा कि " किसी भी व्यक्ति को निरंकुश सत्ता नहीं दी जानी चाहिए।

2) शासन संबंधी विचार :— लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था के बीज दयानंद ने वेदों से ग्रहण किये थे। उनका मानना था कि राज्य की जड़े धर्म पालन मे निहित हो तथा वही राजा श्रेष्ठ है, जो धर्म के अनुरूप शासन करे व राजकार्य मे मंत्रीगण का सहयोग ले। वे प्रसिद्ध सूक्ति 'परोपकाराय सतां विभूतय:' के मानने वाले थे। इसलिए वे मानव कल्याण की भावना से शून्य राजनीतिक उद्देश्यों को वे सदैव ही बुरा मानते थे।

3) ग्राम प्रशासन :— शासन सत्ता का विकेन्द्रीकरण कर स्वामी दयानंद ने ग्राम शासन की स्थापना पर बल दिया। उन्होने ग्राम को प्रशासन की इकाई मानते हुए एक विशाल राष्ट्र मंडल का समर्थन किया।

4) अहिंसा :— स्वामी दयानंद ने 'उचित हिंसा' के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया तथा व्यक्तिगत जीवन में वे पूर्णत: अहिंसावादी थे।

Scanned with

5) विदेशनीति :— स्वामी दयानंद ने देश की सुरक्षा को बहुत महत्व प्रदान किया। वे शक्ति की राजनीति में विश्वास करते थे। कूटनीति सिद्धांतों का समर्थन करते हुए उन्होंने युद्धों, आतताइयों और विदेशी आक्रांताओं को समाप्त करने के लिए असीमित शक्ति के प्रयोग की स्वीकृति प्रदान की।

6) अंतर्राष्ट्रीयवाद :— दयानंद धार्मिक एकता के आधार पर विश्व एकता के आकांक्षी थे वे भारतीय राष्ट्रवाद के पुजारी थे। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों की एकता पर बल दिया उनका विश्वास था कि सभी धर्मों में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व संभव है।

7) दैवी नियमों की श्रेष्ठता का प्रतिपादन :— स्वामीजी ईश्वरीय नियमों की श्रेष्ठता में विश्वास करते थे। अराजकतावादियों जैसे राज्य को एक अनावश्यक बुराई नहीं मानते थे।

8) विधि अथवा दंड संबंधी विचार :—

स्वामीजी ने विधि या दंड को प्रमुखता प्रदान की है। मनु स्मृति को उद्धरित करते हुए उन्होंने लिखा - "दंड ही राजा और शासनकर्ता है वही चार वर्ण तथा चार आश्रमों के धर्मों को प्रतिभूत करता है। कानून ही धर्म है तथा दंड पापों का नाश करने वाला।"

Scanned with

→ स्वामी दयानंद सरस्वती के सामाजिक विचार :—

① व्यक्ति का सर्वांगीण विकास समाज में रहकर ही सम्पन्न हो सकता है। क्योंकि व्यक्ति तथा समाज एक दूसरे के पूरक हैं।

② उन्होंने जातिप्रथा और छुआछूत की बुराई की कटु आलोचना की जन्म से न कोई अछूत है न कोई हीन यह संदेश देकर स्वामीजी मनुष्य मे समानता के आदर्शों को बढाना चाहते थे।

③ वे शिक्षा को नि:शुल्क तथा अनिवार्य बनाना चाहते थे। नारी के ऊपर भी उन्होंने उतना ही बल दिया जितना पुरुषों की शिक्षा के ऊपर।

④ स्वामी जी ने हिन्दू समाज मे व्याप्त विभिन्न कुरीतियों तथा दोषों को मिटाने की मन में चेष्टा की मूर्तिपूजा को उन्होंने वेद-विरुद्ध तथा धर्म-विरुद्ध बताया। दयानंद ने नारी की गरिमा का समर्थन किया स्त्री जाति को मातृ-शक्ति के रूप में पूजने पर बल दिया। बाल विवाह का घोर विरोध किया। अस्पृश्यता को सामाजिक बुराई बताया।

निष्कर्ष :—

दयानंद स्वामी भारतीय राष्ट्र के एक महान निर्माता थे उनका आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में सदैव सम्मान किया जाएगा।

—— × ——

Scanned with

Date 13/4/20

Unit-3

B.A.L.L.B 2nd year 4th SEM Political Science

Topic:→

→ Political and social views of Swami Dayanand Saraswati:→

1.) The nutrients of Democracy:→ Sawami Dayanand, a democrate and his firm believer based on the political conventions and his firm believer based on the political conventions and ideals of ancient India, he also said that a person, no matter how good he is it should not be focused on nagging. He clearly stated that "no person should be given autocracy".

2.) Governance ideas:→ Dayanand had received from the vedas in the midst of democratic governance. He believed that the roots of the state should be rooted in religion and that the ~~roots~~ king is the best, who should rule according to religion and take the cooperation of the ministers in the government. He was a follower of the famous gnome "philanthrophy" 'Sabha vibhutiga'. Therefore, he always consider zero political motives as bad for human welfare.

Scanned with

3) Village Administration :→ By decentralizing governance, Swami Dayanand stressed the establishment of village governance. He supported a large commonwealth, considering the village as the unit of administration.

4) Non-violence :→ Swami Dayanand gave the theory of proper violence and in his personal life he was completely non-violent.

5) Foreign Policy :→ Swami Dayanand gave great importance to the security of the country. He believed in the politics of power. Supporting the principles of diplomacy, he approved the use of unlimited power to eliminate evil, terrorists and foreign invaders.

6) Internationalism :→ Dayanand was an inper aspirant of world unity on the basis of religious unity, he was a priest of Indian nationalism. He emphasized the unity of Hindus and Muslims. He believed that peaceful co-existence is possible in all religions.

Scanned with

7) Rendering the superiority of Goddess rules:→ Swamiji believed in the superiority of divine rules. Anarchists such as did not consider the state an unnecessary evil.

8) Considereation of law or punishment:

Swamiji has given method or punishment prominence. Quoting Manu Smriti, he wrote - "The punishment is Hiraja and the ruler. The same secures the four varnas and the four souls. The law is the destroyer of religion and sins.

☆ Social thoughts of Swami Dayanand Saraswati:-

1) Persons all-round development can be respected only by staying in the society. ~~are~~ Because the person and society are complementary to each other.

2) He was not untouchable by the birth of some criticism of caste system and evil of mischief. Swamiji wanted to increase the ideals of equality in humans

Scanned with

beings by giving this message.

3) They wanted to make education free and compulsory. He gave as much emphasis on women as on the education of men.

4) Swamiji in his mind to eradicate the various evils and faults prevalent, he called the idolatry of chesta against vedas and against religion. Dayanand supported the dignity of women and insisted on worshiping the female caste as mother power. Strongly opposed child marriage. Described untouchability as a social evil.

5) __Conclusion:→__

Dayanand Swami was a great creater of the Indian nation, he will always be respected as the creator of modern India.

Scanned with